अर्घ्यावलि

श्री दशलक्षण विधान

रचयिता
कविवर राजमलजी पवैया
भोपाल

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

समुच्चय पूजन का अर्घ्य

समभावी गुण अर्घ्य बनाऊँ हो जाऊँ भवसागर पार।
पद अनर्घ्य अविनश्वर पाऊँ सादि अनंत सौख्य दातार।।
उत्तम क्षमा आदि दश धर्मों का पालन कर भली प्रकार।
चढ़ूँ मोक्ष के सोपानों पर पाऊँ मुक्ति–भवन का द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उत्तम क्षमा पूजन का अर्घ्य

प्रभु उत्तम क्षमा धर्म के गुण अर्घ्य बनाऊँ अनुपम।
पदवी अनर्घ्य पाने में हो जाऊँ स्वामी सक्षम।।
यह उत्तम क्षमा धर्म ही है क्रोध कषाय निवारक।
सबसे पहले इसको ही धारण करना आवश्यक।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव पूजन का अर्घ्य

शुद्धभाव का अर्घ्य बनाऊँ निश्चय विनय हृदय लाऊँ।
पद अनर्घ्य पाऊँ हे स्वामी शुद्ध आत्मा ही ध्याऊँ।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उत्तम आर्जव पूजन का अर्घ्य

साम्यभावी शुद्ध अर्घ्य अपूर्व लाऊँ सजा कर।
पद अनर्घ्य महान पाऊँ ज्ञान वीणा बजा कर।।
धर्म उत्तम आर्जव ही परम श्रेष्ठ महान है।
छल कपट माया रहित है सौख्य हेतु प्रधान है।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम–आर्जवधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच पूजन का अर्घ्य

महा शुचिमय अर्घ्य गुणमय बनाने का यतन कर लूँ।
प्रगट पद हो अनर्घ्य मेरा राग-द्वेषादि सब हर लूँ।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम सत्य पूजन का अर्घ्य

शुद्ध स्वानुभव के निज अर्घ्य। तत्क्षण देते स्वपद अनर्घ्य।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो।
उत्तम सत्य धर्म सुखकार। श्री मुनि करते अंगीकार।
देखे नाथ परम सुख हो पूजे नाथ महा सुख हो।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम पूजन का अर्घ्य

पूर्ण देश संयम के पावन। अर्घ्य बनाऊँ मैं मन–भावन।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उत्तम तप पूजन का अर्घ्य

शुद्धभाव के अर्घ्य चढ़ाऊँ भव भावों को क्षय कर।
पद अनर्घ्य पाऊँ मैं अपना राग-द्वेष को जय कर।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग पूजन का अर्घ्य

द्वीप रुचकवर जाऊँ अर्घ्य बनाऊँ गुणमय ज्ञानमयी।
पद अनर्घ्य पाऊँ हे स्वामी पाऊँ पद निर्वाणजयी।।
उत्तम त्याग धर्म की महिमा ऋषि मुनि गणधर गाते हैं।
जो इसको धारण करते हैं महामोक्षसुख पाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उत्तम आकिंचन्य पूजन का अर्घ्य

आकिंचनभाव के निज अर्घ्य महिमामय बनाऊँगा।
स्वपद पाऊँ अनर्घ्य अपना ध्यान फल उर सजाऊँगा।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आकिंचन्यधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य पूजन का अर्घ्य

निज गुणमय अर्घ्य अपूर्व शुद्ध बनाऊँगा।
पदवी अनर्घ्य के हेतु निज को ध्याऊँगा।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।